प्रातः स्मरणीय
परमपूज्य परमाराध्य
गुरुदेव श्रील १०८ श्रीदामोदर दास
बाबाजी महाराज का
गुणलेश सूचक
कीर्त्तन

श्रीगौराङ्ग कृपामूर्त्तिं नीमकुठीनिवासिनम् ।
दास दामोदरं वन्दे श्रीगुरुं करुणार्णवम् ॥

सम्पादकः-
पण्डित श्रीरघुनाथ दास शास्त्री

प्रकाशकः-
श्रीनरहरि दास बाबाजी महाराज

परमाराध्य गुरूदेव श्रील दामोदर दास बाबाजी महाराज का गुणलेश सूचक कीर्तन

श्रीगौरांग कृपामूर्तिं नीमकुठीनिवासिनम् ।
दास दामोदरं वन्दे श्रीगुरुं करुणार्णवम् ॥

जयरे जयरे जय, श्रीगुरू करूणामय,
बाबा दामोदर महाशय ।
प्रेमधर्म प्रचारिते, अवतीर्ण अवनीते,
पतितेर बन्धु दयामय । ।
अयाचित दीन जने, ऊद्धारिले कृपागुणे,
भवसिन्धु तरणे कर्णधार ।
अपार करुणा सिन्धु, अधम जनार बन्धु,
कि दिव तुलना तोमार । ।
फरिदपुर जिला नामे, बाबरचर नाम ग्रामे,
वैष्णव प्रधान पल्ली हय ।
भक्त दीनबन्धु पिता, श्यामादेवी नामे माता,
तार गर्भे हइलो ऊदय। ।
पिता-माता दुहुजने, आनन्द बाड़िलो मने,
देवेन्द्र राखिलो हर्षे नाम ।
प्रतिवेशी जने जने, सवार आनन्द मने,
पिता-माता पूर्ण मनस्काम । ।
बाड़े शिशु दिने दिने, मन दिलो अध्यायने,
गृहकार्ये रूचि नाहि हय ।
वयस आठार जानि, संसार विपत्ति मानि,
गृहत्याग कैला महाशय । ।
बहुतीर्थ घुरि फिरि, आसि नीलाचल पुरी,
जगन्नाथ कैला दरशन।

पद ब्रजे घुरि फिरि, आसि नीलाचल पुरी, 2
श्रीगोविन्द कैला दरशन । ।
श्रीबदरी दरशने, वासना हइलो मने,
पुनः मथुराय आगमन ।
एवे आसि वृन्दावने, आनन्द बाढ़िलो मने,
महाराज वैष्णव चरण। ।
पाइया ताँहार दर्शन, आनन्दित हैलो मन,
नीमकुठी आइला सेइ संगे ।
हैया तिनि कृपावान, दीक्षा वेश कैला दान,
आनन्देते भास साधुसंगे । ।
श्रीगुरू अन्तरे जानि, परम ऊल्लास मानी,
नाम दिलो दामोदर दास।
श्रीगुरू वैष्णव संगे, भासिला आनन्द रंगे,
एतदिने पूर्ण अभिलाष । ।
गुरुदेव संगेते करि, घर देखान माधुकरी,
ताहातेइ ऊदर पूरण ।
साधुसंगे सदावास, पुरे सर्व अभिलाष,
भजनांग हयतो मार्जन । ।
सिद्ध रामकृष्ण दास, बिषये महा ऊदास,
भजनइ जीवनेर सार।
ताँर संग करे निति, शिखान भजन रीति,
सेइ संगे आनन्द तोमार । ।
श्रीदीन शरण दास, श्रीकुञ्ज बिहारी दास,
श्रीजय निताइ संगे वास।
विरक्त सुदामा दास, बाबा श्रील श्याम दास,
एक संगे करिला निवास । ।
एसव संगेर कथा, शुनिले जुड़ये व्यथा,
अविद्यादि करे पलायन ।
मार्जन हय भजन, साधुसंगे अनुक्षण,
एइ वाणी करिला पालन । ।

निर्जला श्रीएकादशी अपतित व्रत ।
आजीवन पालनेते आछिला निरत ।।
तोमार भजन रीति अति विलक्षण ।
एक मुखे नाहि हय ताहार वर्णन।।
निर्जने करिते चाओ एकान्त भजन ।
श्रीगुरू आदेशे तुमि करिला गमन ।।
पदब्रजे चलि चलि वेलोयार जंगले ।
चतुर्दिके वृक्षमय सुनिर्जन स्थले ।।
चालीश दिनेर व्रते हइला मगन ।
नियमित त्रिश दिन करि अनशन ।।
देहेते सम्वित नाइ हैला अचेतन ।
निजे श्रीराधिका आसि मुखे बारि देन ।।
किछुक्षण परे तुमि पाइला चेतन।
कृपामयीर कृपा इहा हइलो स्मरण ।।
स्वामिनीर कृपा स्मरि करिला रोदन ।
वारेक दर्शन दिया राखह जीवन ।।
तदन्ते आइला टेरी कदम्व कानन ।
रूपेर भजन स्थली अतीव निर्जन ।।
स्थान देखि मन तवो निरमल हैला ।
भजन करिबो एथा निश्चय करिला ।।
तथारय श्यामदास महाराज नाम ।
परम वैष्णव तिनि सर्व गुणधाम ।।
अतीव आनन्दे करो ताँहार सेवन ।
ताँर काछे कर नित्य पाठादि श्रवण ।।
आसन छाडिया दिवा नाकर गमन ।
रात्रिकाले करो तुमि बारेक भोजन ।।
जय निताइ बाबा संगे एथा देखा हय ।
ऊभयेइ एक आत्मा एकइ आशय ।।

इष्ट गोष्ठी एकसंगे भजनालापन ।
नैष्ठिक भजनाग्रह एकइ भजन ।।
एकदा टेरी कदम्वे नियम सेवा मास ।
माठापाने व्रत करि तव अभिलाष ।।
ऐइरूपे मास व्रत कैला उद्यापन ।
व्रत अन्ते तथा एक अपूर्व दर्शन ।।
कुठीर बाहिरे एक तमाल वृक्ष रय ।
देखिला जे वृक्ष नय जेन स्वर्णमय ।।
ताहा देखि भावे तुमि हइला बिह्वल ।
फुकारि कैला रोदन हइया विकल ।।
रात्रिकाले स्वप्न देख गोपाल तब कोले।
आरना देखिला तुमि स्वपन भांगिले ।।
बहुदिन हयेछिलो कुक्षिभार भाव ।
एइरूप पेये छिले बहु अनुभव ।।
तबे पदब्रजे ब्रजे कैला दरशन ।
कभु नन्दीश्वर गिरि कभु वृन्दावन ।।
वृषभानुपुर कभु गिरि गोवर्द्धन ।
जावट संकेत आर कभु काम्यवन ।।
चलिया द्वादश वन करिला दर्शन ।
व्रतदिने वृन्दावने श्रीगुरू दर्शन ।।
तोमार जीवने एइ अपतित व्रत ।
मन प्राण दिया तुमि करिला यापित ।।
एइ रूपे बहु तीर्थ करिया भ्रमण ।
चारधाम पदब्रजे करिला दर्शन ।।
एकदा यमुना तीरे सुमधुर स्वरे ।
वायलिन बाजाओ अति आवेशेर भरे ।।
हेनइ समये एक सर्प विषधर ।
फना तुलि दाड़ाइलो अति भयंकर ।।

आवेश भांगिले आर सर्प देख नाइ ।
आसाचिह्न आछे किन्तु जाओया चिह्न नाइ ।।
एरूप तोमार कीर्ति बहुत विस्तार ।
मुँइ दीन भक्तिहीन किवा बुझि तार ।।
आर एकदिन कथा अति चमत्कार ।
अल्पाक्षरे कहि मात्र ना करि विस्तार ।।
सिन्धि धर्मशाला हैते कोन एकजन ।
अकस्मात् कुठीरेते कैला आगमन ।।
आसि वलि पाँचशत टाका लओ बाबा ।
अर्थ दिया भालो मते कर साधुसेवा ।।
ताहादिया यथारिति साधुसेवा कैला ।
ऊत्सवान्ते रात्रे तुमि शयन करिला ।।
शयने ते रात्रे एक दुर्घट स्वपन ।
देख देह हैते प्राण कैलो निष्क्रमन ।।
प्राण बिना देह रय कोथाओ नाशुनि ।
सकलि सम्भवे तुमि भक्ति धने धनी ।।
विषयिर अन्न हय जत विषमय ।
विषमक्ष्ये मृत्यु किन्तु तत दोषनय ।।
तोमातेइ देखि इहार ज्वलन्त प्रमाण ।
नाहि तुल्य तुल्य नाहि तोमार समान ।।
एरपर श्यामकुठी कैला तुमि वास ।
बहुदिन दीप शुन्य कुटीरे निवास ।।
तथा हैते आसि करो गुरूर सेवन ।
मन बुझि सेवा करो जखन जेमन ।।
श्रीगुरूर असुस्थेर भावादि बुझिया ।
नीमकुठी कैलाश्रय स्वाश्रम जानिया ।।
नीमेर प्राचुर्य हेतु नीमकुठी नाम ।
ताहाते कैला साधन साध्य हरिनाम ।।

श्रीगुरूर अन्तर्धान हइला आकुल ।
कोथा जाओ किवा कर हइला व्याकुल ।।
तवे किछु दिन पर स्थिर करि मन ।
स्वतः आवेशित भावे करह भजन ।।
एकशत दश वर्ष वयस कारण ।
ना चले दर्शन शक्ति अचल चरण ।।
कुठीरेइ थाक सदा खेद अनुक्षण ।
श्रीगुरू गोविन्द स्मरि करह रोदन ।।
सेवके पुछिला बाबा मोदेर कि गति।
कोन भय नाइ हरि नामे राख रति ।।
कलिकाले महामन्त्र सर्वयज्ञ सार ।
हरिनाम बिना किछु नाहि नाहि आर ।।
निरूपित काल तिथि आगत देखिया ।
शिष्यगण प्रतिकह आवेशित हैया ।।
कृष्णनाम करो सर्वे समय तो नाइ ।
करूणा करह प्रभु निताइ निताइ ।।
वलिते वलिते तुमि अन्तर्मना हैला ।
शुभलग्ने शुभतिथि आसिया मिलिला ।।
चौद शत सात साले माघ मास प्राते ।
कृष्णपक्ष सप्तमीर तिथिर योगेते ।।
युगल चरण पद्म करिते स्मरण ।
युगल सेवाय कुञ्जे करिला गमन ।।
रोदन करिछे जत मिलि भाइ भाइ ।
ओहे प्रभु आमादेर आर केह नाइ।।
बारेक देखाओ मोदेर ओचाँद बदन ।
कृपाते सान्तना कर दिया दरशन।।
बहुदिन करियाछि तोमारे अवज्ञा ।
आर ना करिबो प्रभु करिगो प्रतिज्ञा ।।

अभि माने दूरे थाका ऊचित् ना हय।
सदय हइया तुमि हओगो ऊदय ।।
सम्प्रदाये छिला तुमि उज्वल रतन ।
स्मरिया तोमार गुण झरे दुनयन ।।
अन्धकारे ज्वलेछिलो जे प्रदीप कटि ।
एके एके निभे गेलो ना रहिलो गुटि ।।
जाँरा छिला आमादेर भास्कर भास्कर ।
एके एके अस्तमित सव दिवाकर ।।
एवे म्रियमाण रूपे आछे जाहा आर ।
अकस्मात् झंझावाते करना आँधार ।।
तोमार जे गुणराजि हयतो अपार ।
मुँइ अति दुराचार कि वर्णियो आर।।
कृपा करि लह प्रभु आपनार करि ।
पद धर दास हरि भक्त शिरोपरि ।।

निताइ गौर हरिबोल, निताइ गौर हरिबोल,
जय जय श्रीराधे जय जय श्रीराधे ।।

परमपूज्य श्रीश्री १०८ श्रीदामोदर दास बाबाजी महाराज (श्रीगोविन्द कुण्ड-नीमकुठी, वृन्दावन)

आयुः-110 वर्ष

प्राप्त जन्मकाल :- सन् 1890 ई.। बंगाल प्रान्त के 'फरीदपुर' जिलान्तर्गत-"बाबरचर"नामक ग्राम में।

निकुञ्ज गमनकाल :- सन् 2000 ई.। मिती माघ कृष्ण सप्तमी वृन्दावन में।

दीक्षा वेषाश्रय:-"बाबा श्री वैष्णव चरण दास" वृन्दावन,गोविन्द कुण्ड स्थित नीमकुठी । घर का पूर्व नाम "देवेन्द्र" था। पिता-"दीन बन्धु " एवं माता'श्यामा देवी" ।

वाल्यकाल से ही वैरागी स्वभाव था। पढ़ने में मन न लगने का मूल कारण था, हरी नाम में ही निष्ठा एवं रुचि । 18 वर्ष की आयु में आपने गृह त्याग किया। समस्त तीर्थों का भ्रमण करते हुए पुरी धाम पहुँचे। वहाँ भी मन नहीं टिका तो बद्रिका धाम के विचार से प्रथम् मथुरा आए। वृन्दावन आए। नीम कुटी वाले बाबा का दर्शन कर आपका मन लग गया। उनकी भजन परिपाटी आदि देख मन मुग्ध हुआ और दीक्षा बाबा से ले ली। फिर तो ऐसे कृपा का अनुभव किया कि बाहरी वासनाएँ सब धरी रह गईं। श्री गुरुदेव कृपा लाभ का फल, कि व्रज भ्रमण की प्रबल वासना फूट पड़ी। "गोविन्द कुण्ड" पर पहले बहुत सारे नीम के पेड़ थे। फिर तो यहाँ रहते सिद्ध पण्डित बाबा, दीन शरण दास जी, कुंज बिहारी दास, जय निताई दास आदि का संग लाभ कर सजातीय वैष्णवों के संग रागानुगीय भजन पद्धति में गोते लगाने लगे। सन्ध्या एक बार ब्रजवासी घरों से माधुकरी माँग लाते बाकी सारा दिन भजन में जाता। आजीवन आपने निर्जला व्रत का पालन किया। गुरु आज्ञा लेकर वैराग्य पूर्वक नंद गाँव के पास "टेर कदम"पर श्री कृष्ण दर्शन की लालसा से तीन दिन का अनशन-व्रत किया। बिना अन्न जल की अवस्था मूर्छा में अपने हाँथों श्रीजी ने जल पिलाया। उस कृपा का स्मरण कर आजीवन रोते रहे। वहीं पर बाबा श्यामदास का भी संग लाभ हुआ। दिन भर अपना-अपना भजन करते, सन्ध्या समय इष्ट गोष्ठी होती ।

घटनाक्रमः- 1- एक बार "दास गोस्वामी" जैसे खाली मठा पी कर भजन करने की वासना जगी। एक महीने तक नियम पालन किया। अनुग्रह के प्रति लालसा में तीव्र लालायित रहते। अचानक एक महीने पीछे ही पास खड़े श्याम तमाल में साक्षात् कृष्ण दर्शन हुआ।

घटनाक्रमः - 2- एक बार यमुना किनारे आप वायलन वाद्य बजा रहे थे। आप अच्छे वायलन वादक थे। पक्के रागों का ज्ञान भी था । चमत्कार, कि आप ध्यानस्थ थे। उसी समय मोहित होकर एक काला नाग-फँड़धारी सामने खड़ा हुआ दीखा। आपने बाजा बन्द किया कि वह चुपचाप चला गया।

घटनाक्रमः- 3- एक बार सिंधी धर्मशाला के एक भक्त ने आप के पास साधु सेवा निमित्त 500/- भेंट किया। उसी रात एक भयानक स्वप्न आया कि, 'शरीर से प्राण निकल गया और मैं खड़े देख रहा हूँ' । उसी दिन से मधुकरी के सिवा बाहर का द्रव्य लेना बंद कर दिया।
इसके पश्चात् गोवर्द्धन श्याम कुटी पर भी बहुत दिन निर्जन में रहे। पश्चात् ब्रज वन भ्रमण कर पुनः गुरुदेव के पास आ गए।

घटनाक्रमः- 4- एक बार 'टेर कदम' पर रहते आप पेड़ पर से गिर गए। कमर टूट गई। आजन्म भचक कर ही चलते थे। जाने से पूर्व आने वाले साधकों को एक शिक्षा दे गए कि, "हाय! श्री गुरुदेव अप्रकट पश्चात् सदा मुझे आत्मग्लानी ही बनी रही, कि भगवत्-स्वरूप साक्षात् गुरुदेव की सेवा छोड़ कर खाक-भजन के लिए अन्यत्र भटकता फिरा। वैरागी के लिए- "गुरुदेव भजन वास्ते तो प्रेरित करेंगे ही।" किन्तु साधक का कर्तव्य प्रथम् गुरु सेवा है।" अब मुझे तड़पा रही है।

श्रीगौडीय सम्प्रदाय संस्थापकाचार्य सर्वेश्वर
श्रीश्रीराधाकृष्णावतार श्रीश्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुजी